चौधरी बंसी लाल विश्वविद्यालय, भिवानी

भारतीय संस्कृति एवं भाषा विभाग

स्नातक हिन्दी पॉचवा एवं छटा सेमेस्टर पाठ्यक्रम

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार

शैक्षणिक सत्र : जुलाई 2024 से प्रभावी

Approved by -

UGBOS 30June.2026 & Faculty Board.17.07.2026.5th 6th Sem.

SEMESTER-5

Remarks	Course Type	Course Code	Nomenclature of Course	Credits	Theory + Tutorial	Cont. Hours/ Week	Internal marks	External Marks	Total Marks	Exam Duration
Scheme A, B & C	CC-5 MCC-9 4 credits	24UN-HND-501	हिन्दी साहित्य का इतिहास	4	3+1	4	30	70	100	3 hrs.
Scheme B & C	MCC-10 4 credits	24UN-HND-502	हिन्दी साहित्य का इतिहास (भारतेन्दु और द्विवेदी युग)	4	3+1	4	30	70	100	3 hrs.
Scheme B & C	DSE-2 4 credits **Select one Option**	24UN-HND-503	हिन्दी साहित्य का इतिहास (छायावादी युग)	4	3+1	4	30	70	100	3 hrs.
		24UN-HND-504	हिन्दी साहित्य का इतिहास (प्रगतिवादी युग)	4	3+1	4	30	70	100	3 hrs.
Scheme B & C	DSE-3 4 credits **Select one Option**	24UN-HND-505	हिन्दी साहित्य का इतिहास (प्रयोगवादी युग)	4	3+1	4	30	70	100	3 hrs.
		24UN-HND-506	कबीरदास : विशेष अध्ययन	4	3+1	4	30	70	100	3 hrs.

SEMESTER-6

Remarks	Course Type	Course Code	Nomenclature of Course	Credits	Theory + Tutorial	Cont. Hours/ Week	Internal marks	External Marks	Total Marks	Exam Duration
Scheme A, B & C	CC-6 MCC-11 4 credits	24UN-HND-601	भारतीय और पाश्चात्य काव्यशास्त्र	4	3+1	4	30	70	100	3 hrs.
Scheme B & C	MCC-12 4 credits	24UN-HND-602	सूरदास: विशेष अध्ययन	4	3+1	4	30	70	100	3 hrs.
Scheme B & C	DSE-4 4 credits **Select one Option**	24UN-HND-603	जयशंकर प्रसाद : विशेष अध्ययन	4	3+1	4	30	70	100	3 hrs.
		24UN-HND-604	प्रेमचन्द : विशेष अध्ययन	4	3+1	4	30	70	100	3 hrs.
Scheme B & C	DSE-5 4 credits **Select one Option**	24UN-HND-605	लोक साहित्य	4	3+1	4	30	70	100	3 hrs.
		24UN-HND-606	हिन्दी कहानी साहित्य	4	3+1	4	30	70	100	3 hrs.
Scheme A only	**CC-M-6**	24UN-HND-607N	हिन्दी भाषा और साहित्य	4	3+1	4	30	70	100	3 hrs.

बी.ए. हिन्दी अनिवार्य
(पंचम सेमेस्टर)
हिन्दी साहित्य का इतिहास (Course Type : CC-5, MCC-9)

विषय कोड–24UN-HND-501
क्रेडिट : 04

पूर्णांक : 100
लिखित : 70
आन्तरिक मूल्यांकन : 30
समय : 3 घण्टे

शिक्षण–अधिगम के उद्देश्य व अपेक्षित परिणाम

- **उद्देश्य (Objective)**

1. विद्यार्थियों को हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन की परम्परा, काल–विभाजन तथा पुनर्लेखन की समस्याओं से परिचित कराते हुए साहित्यिक इतिहास–बोध विकसित करना।
2. विद्यार्थियों में आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल एवं आधुनिक काल की ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं साहित्यिक परिस्थितियों की सम्यक् समझ विकसित करना।
3. विभिन्न साहित्यिक युगों की प्रमुख काव्यधाराओं, उनकी विशेषताओं तथा प्रतिनिधि कवियों के साहित्यिक योगदान का अध्ययन कर साहित्यिक विश्लेषण की क्षमता विकसित करना।
4. हिंदी साहित्य के विकासक्रम के साथ आधुनिक हिंदी गद्य–विधाओं तथा खड़ीबोली हिंदी के विकास को समझने एवं आलोचनात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में विद्यार्थियों को सक्षम बनाना।

- **अधिगम प्रतिफल (Learning outcome)**

1. विद्यार्थी हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन, काल–विभाजन तथा विभिन्न साहित्यिक युगों की प्रमुख विशेषताओं का क्रमबद्ध एवं आलोचनात्मक अध्ययन कर सकेंगे।
2. विद्यार्थी आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल एवं आधुनिक काल की साहित्यिक प्रवृत्तियों तथा प्रतिनिधि कवियों के योगदान का विश्लेषण एवं मूल्यांकन करने में सक्षम होंगे।
3. विद्यार्थी विभिन्न काव्यधाराओं एवं साहित्यिक आंदोलनों की तुलनात्मक समीक्षा कर उनकी सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रासंगिकता को समझ सकेंगे।
4. विद्यार्थी हिंदी गद्य की प्रमुख विधाओं के विकास, आधुनिक हिंदी साहित्य की प्रवृत्तियों तथा खड़ीबोली हिंदी के विकासक्रम का सम्यक् विवेचन कर सकेंगे।

पाठ्यक्रम–विभाजन

इकाई–1. हिंदी साहित्य का इतिहास लेखन

- हिंदी साहित्य के इतिहास का स्वरूप
- हिंदी साहित्य का इतिहास लेखन की परम्पंरा।
- साहित्य के इतिहास के पुनर्लेखन की समस्याएँ।
- हिन्दी साहित्य का काल–विभाजन

इकाई–2. हिंदी साहित्य का आदिकाल

- आदिकाल का नामकरण।
- आदिकालीन परिस्थितियाँ– ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और साहित्यिक।
- आदिकालीन साहित्य का वर्गीकरण– (सिद्ध साहित्य, जैन साहित्य, नाथ साहित्य, रासो साहित्य या वीर काव्य)
- आदिकालीन कविता की सामान्य प्रवृत्तियाँ।
- आदिकालीन साहित्य के प्रतिनिधि कवियों का संक्षिप्त परिचय (चन्द्रबरदाई, अमीर खुसरो और विद्यापति)

इकाई–3. हिंदी साहित्य का भक्तिकाल

- भक्तिकालीन परिस्थितियाँ– ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और साहित्यिक।
- भक्ति आंदोलन का वैशिष्ट्य।
- भक्तिकाव्य की विविध धाराएँ– संत काव्यधारा, सूफी काव्यधारा, राम काव्यधारा और कृष्ण काव्यधारा का वैशिष्ट्य।

* भक्तिकालीन काव्य की उपलब्धियाँ।
* हिन्दी साहित्य का स्वर्ण युग : भक्तिकाल।
* भक्तिकालीन साहित्य के प्रतिनिधि कवियों का संक्षिप्त परिचय (कबीर, जायसी, तुलसीदास और सूरदास)

इकाई–4. हिंदी साहित्य का रीतिकाल

* रीतिकालीन परिस्थितियाँ– ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और साहित्यिक।
* रीतिकाल का नामकरण।
* रीतिकालीन काव्य और दरबारी संस्कृति।
* रीतिकालीन काव्य की विशेषताएँ।
* रीतिकालीन काव्यधाराएँ और उनका वैशिष्ट्य– रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध और रीतिमुक्त।
* रीतिकाल के प्रतिनिधि कवियों का संक्षिप्त परिचय (केशवदास, चिन्तामणि, भूषण, घनानन्द, बिहारी)

आवश्यक निर्देश :– पाठ्यक्रम में दिए गए उपर्युक्त बिन्दुओं से बाहर कोई प्रश्न नहीं पूछा जाएगा।

1. **प्रश्न संख्या–1 से 4**– में पाठ्यक्रम की चारों इकाइयों से आन्तरिक विकल्प के साथ कुल 8 प्रश्न पूछे जाएंगे जिनमें से विद्यार्थियों को 04 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न के 14+14+14+14 = 56 अंक निर्धारित हैं। (उत्तरों की अधिकतम शब्द सीमा : 500 शब्द)
2. **प्रश्न संख्या–5**– पाठ्यक्रम की प्रत्येक इकाई से 2 प्रश्नों का चयन करते हुए सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से 8 अति लघूत्तरात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से विद्यार्थियों को किन्हीं 7 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न 2 अंक का होगा। कुल मिलाकर यह प्रश्न 2X7 = 14 अंकों का होगा। (उत्तरों की अधिकतम शब्द सीमा : 15–20 शब्द)

संदर्भ सूची–

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास– सम्पादक डॉ. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
2. हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास– डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
3. हिन्दी साहित्य का अतीत (भाग एक और दो)– विश्वनाथप्रसाद मिश्र वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास– डॉ. रामकुमार वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
5. हिन्दी साहित्य की भूमिका– आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. हिन्दी वाङ्मय का विकास – डॉ. सत्येदव चौधरी, प्रकाशक–मेहरचन्द लक्ष्मणदास, दरियागंज, दिल्ली।
7. हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास– बाबू गुलाबराय, साहित्यरत्न भण्डार प्रकाशन, आगरा।

बी.ए. हिन्दी अनिवार्य
(पंचम सेमेस्टर)
हिन्दी साहित्य का इतिहास (भारतेन्दु और द्विवेदी युग) (Course Type : MCC-10)

विषय कोड–24UN-HND-502
क्रेडिट : 04

पूर्णांक : 100
लिखित : 70
आन्तरिक मूल्यांकन : 30
समय : 3 घण्टे

शिक्षण–अधिगम के उद्देश्य व अपेक्षित परिणाम

- **उद्देश्य (Objective)**

1. विद्यार्थियों को आधुनिक हिन्दी साहित्य के उद्भव, भारतीय नवजागरण तथा भारतेन्दु एवं द्विवेदी युग की ऐतिहासिक एवं साहित्यिक पृष्ठभूमि से परिचित कराना।
2. भारतेन्दु युग एवं द्विवेदी युग की प्रमुख साहित्यिक प्रवृत्तियों, राष्ट्रीय चेतना तथा स्वच्छन्दतावादी विचारधारा की समझ विकसित करना।
3. भारतेन्दु, उनके मंडल तथा समकालीन प्रमुख साहित्यकारों एवं कवियों के साहित्यिक योगदान का अध्ययन कराना।
4. हिन्दी पत्रकारिता एवं पत्र–पत्रिकाओं की भूमिका तथा हिन्दी साहित्य के विकास में उनके योगदान का मूल्यांकन करने की क्षमता विकसित करना।

- **अधिगम प्रतिफल (Learning outcome)**

1. विद्यार्थी आधुनिक हिन्दी साहित्य के विकासक्रम तथा भारतेन्दु एवं द्विवेदी युग की विशेषताओं का विश्लेषण कर सकेंगे।
2. विद्यार्थी प्रमुख साहित्यकारों, कवियों एवं साहित्यिक धाराओं के योगदान का सम्यक् मूल्यांकन कर सकेंगे।
3. विद्यार्थी राष्ट्रीय चेतना, नवजागरण तथा स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्तियों के साहित्यिक प्रभाव को समझ सकेंगे।
4. विद्यार्थी हिन्दी की प्रमुख पत्र–पत्रिकाओं एवं पत्रकारिता के साहित्यिक और सामाजिक योगदान की व्याख्या करने में सक्षम होंगे।

पाठ्यक्रम–विभाजन

इकाई–1. आधुनिक काल और भारतीय नवजागरण, भारतेन्दु युगीन परिवेश, भारतेन्दु युग की प्रमुख प्रवृत्तियाँ, भारतेन्दु का साहित्यिक परिचय, भारतेन्दु और उनका मंडल।

इकाई–2. द्विवेदी युग की विशेषताएँ, राष्ट्रीय काव्यधारा के प्रमुख कवियों का परिचय, राष्ट्रीय काव्यधारा की विशेषताएँ, स्वच्छन्दतावाद का अर्थ एवं स्वरूप, स्वच्छन्दतावाद के कवियों का साहित्यिक परिचय।

इकाई–3. बद्रीनाथ चौधरी 'प्रेमघन', ठाकुर जगमोहन सिंह, अम्बिकादत्त व्यास, राधाकृष्ण दास का साहित्यिक परिचय।

इकाई–4. भारतेन्दु युग की प्रमुख पत्र–पत्रिकाएँ, भारतेन्दु की 'हरिश्चंद्र मैगजीन', प्रतापनारायण मिश्र की 'ब्राह्मण', बालकृष्ण भट्ट की 'हिंदी प्रदीप' बद्रीनारायण चौधरी की 'आनंदकादम्बिनी', लाला श्रीनिवासदास की 'सदादर्श', राधाचरण गोस्वामी की 'भारतेन्दु पत्रिका' का परिचय एवं संपादन।

आवश्यक निर्देश :– पाठ्यक्रम में दिए गए उपर्युक्त बिन्दुओं से बाहर कोई प्रश्न नहीं पूछा जाएगा।

1. **प्रश्न संख्या–1 से 4**– में पाठ्यक्रम की चारों इकाइयों से आन्तरिक विकल्प के साथ कुल 8 प्रश्न पूछे जाएंगे जिनमें से विद्यार्थियों को 04 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न के 14+14+14+14 = 56 अंक निर्धारित हैं। (उत्तरों की अधिकतम शब्द सीमा : 500 शब्द)
2. **प्रश्न संख्या–5**– पाठ्यक्रम की प्रत्येक इकाई से 2 प्रश्नों का चयन करते हुए सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से 8 अति लघूत्तरात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से विद्यार्थियों को किन्हीं 7 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न 2 अंक का होगा। कुल मिलाकर यह प्रश्न 2X7 = 14 अंकों का होगा। (उत्तरों की अधिकतम शब्द सीमा : 15–20 शब्द)

संदर्भ सूची–

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास– सम्पादक डॉ. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
2. हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास– डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
3. हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास– बाबू गुलाबराय, साहित्यरत्न भण्डार प्रकाशन, आगरा।
4. हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास– डॉ. रामकुमार वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
5. हिन्दी साहित्य की भूमिका– आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. हिन्दी वाङ्मय का विकास – डॉ. सत्येदव चौधरी, प्रकाशक–मेहरचन्द लक्ष्मणदास, दरियागंज, दिल्ली।

बी.ए. हिन्दी अनिवार्य
(पंचम सेमेस्टर)
हिन्दी साहित्य का इतिहास (छायावादी युग) (Course Type : DSE-2)

विषय कोड–24UN-HND-503
क्रेडिट : 04

पूर्णांक : 100
लिखित : 70
आन्तरिक मूल्यांकन : 30
समय : 3 घण्टे

शिक्षण–अधिगम के उद्देश्य व अपेक्षित परिणाम

- **उद्देश्य (Objective)**

1. विद्यार्थियों को छायावादी युग की ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक पृष्ठभूमि तथा उसके उद्भव के कारणों से परिचित कराना।
2. छायावाद की प्रमुख प्रवृत्तियों, प्रकृति–चित्रण, रहस्यवाद एवं राष्ट्रीय–सांस्कृतिक चेतना की समझ विकसित करना।
3. छायावादी एवं समकालीन प्रमुख कवियों के व्यक्तित्व एवं साहित्यिक योगदान का अध्ययन कराना।
4. विद्यार्थियों में साहित्यिक विश्लेषण, तुलनात्मक अध्ययन एवं आलोचनात्मक चिंतन की क्षमता विकसित करना।

- **अधिगम प्रतिफल (Learning outcome)**

1. विद्यार्थी छायावाद की अवधारणा, विशेषताओं तथा उसके साहित्यिक महत्व का विश्लेषण कर सकेंगे।
2. विद्यार्थी छायावादी युग की राष्ट्रीय, सांस्कृतिक एवं काव्यगत प्रवृत्तियों की पहचान एवं व्याख्या कर सकेंगे।
3. विद्यार्थी प्रमुख छायावादी कवियों एवं अन्य समकालीन कवियों के साहित्यिक योगदान का मूल्यांकन कर सकेंगे।
4. विद्यार्थी प्रसाद और पन्त सहित विभिन्न कवियों की काव्य–दृष्टि का तुलनात्मक अध्ययन एवं आलोचनात्मक विवेचन करने में सक्षम होंगे।

पाठ्यक्रम–विभाजन

इकाई–1. छायावादी युग की सीमा, छायावाद का नामकरण, छायावाद का परिवेश; छायावाद में प्रकृति चित्रण, छायावाद की परिभाषाएँ व नामकरण, छायावाद के उद्भव के कारण।

इकाई–2. छायावाद की प्रेरक परिस्थितियाँ, छायावादी युग की सामान्य प्रवृतियाँ, छायावादी युग की राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक काव्यधारा, राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक काव्यधारा के प्रमुख कवि– सियारामशरण गुप्त, रामधारी सिह 'दिनकर', बालकृष्ण शर्मा नवीन, सुभद्राकुमारी चौहान का साहित्यिक परिचय।

इकाई–3. रहस्यवाद और छायावाद में अंतर, छायावादी युग के प्रमुख कवि– जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानन्दन पन्त, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', महादेवी वर्मा और रामकुमार वर्मा, प्रसाद और पन्त का तुलनात्मक अध्ययन।

इकाई–4. छायावादी युग के अन्य कवि– माखनलाल चतुर्वेदी, भगवतीचरण वर्मा, रामनरेश त्रिपाठी का साहित्यिक परिचय।

आवश्यक निर्देश :– **पाठ्यक्रम में दिए गए उपर्युक्त बिन्दुओं से बाहर कोई प्रश्न नहीं पूछा जाएगा।**

1. **प्रश्न संख्या–1 से 4**– में पाठ्यक्रम की चारों इकाइयों से आन्तरिक विकल्प के साथ कुल 8 प्रश्न पूछे जाएंगे जिनमें से विद्यार्थियों को 04 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न के 14+14+14+14 = 56 अंक निर्धारित हैं। (उत्तरों की अधिकतम शब्द सीमा : 500 शब्द)
2. **प्रश्न संख्या–5**– पाठ्यक्रम की प्रत्येक इकाई से 2 प्रश्नों का चयन करते हुए सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से 8 अति लघूत्तरात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से विद्यार्थियों को किन्हीं 7 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न 2 अंक का होगा। कुल मिलाकर यह प्रश्न 2X7 = 14 अंकों का होगा। (उत्तरों की अधिकतम शब्द सीमा : 15–20 शब्द)

संदर्भ सूची–

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास– सम्पादक डॉ. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
2. हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास– डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
3. हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास– बाबू गुलाबराय, साहित्यरत्न भण्डार प्रकाशन, आगरा।
4. हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास– डॉ. रामकुमार वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
5. हिन्दी साहित्य की भूमिका– आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. हिन्दी वाङ्मय का विकास – डॉ. सत्येदव चौधरी, प्रकाशक–मेहरचन्द लक्ष्मणदास, दरियागंज, दिल्ली।

बी.ए. हिन्दी अनिवार्य

(पंचम सेमेस्टर)

हिन्दी साहित्य का इतिहास (प्रगतिवादी युग) (Course Type : DSE-2)

विषय कोड–24UN-HND-504
क्रेडिट : 04

पूर्णांक : 100
लिखित : 70
आन्तरिक मूल्यांकन : 30
समय : 3 घण्टे

शिक्षण–अधिगम के उद्देश्य व अपेक्षित परिणाम

- **उद्देश्य (Objective)**

1. विद्यार्थियों को हिन्दी साहित्य में प्रगतिवादी विचारधारा के उद्‌भव, विकास तथा उसकी सामाजिक–ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से परिचित कराना।
2. प्रगतिवादी साहित्य के उद्देश्यों, प्रमुख प्रवृत्तियों तथा जनवादी चेतना की समझ विकसित करना।
3. प्रगतिवादी युग के प्रमुख कवियों एवं साहित्यकारों के व्यक्तित्व, कृतित्व तथा काव्य–सौन्दर्य का अध्ययन कराना।
4. साहित्य के माध्यम से सामाजिक यथार्थ, मानवीय मूल्यों एवं आलोचनात्मक दृष्टिकोण के विकास को प्रोत्साहित करना।

- **अधिगम प्रतिफल (Learning outcome)**

1. विद्यार्थी प्रगतिवाद की अवधारणा, स्वरूप एवं हिन्दी साहित्य में उसके योगदान का विश्लेषण कर सकेंगे।
2. विद्यार्थी प्रगतिवादी काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों एवं उसके सामाजिक सरोकारों की व्याख्या कर सकेंगे।
3. विद्यार्थी प्रमुख प्रगतिवादी कवियों एवं साहित्यकारों के साहित्यिक योगदान तथा काव्य–सौन्दर्य का मूल्यांकन कर सकेंगे।
4. विद्यार्थी निबंध एवं काव्य साहित्य के माध्यम से सामाजिक चेतना, मानवीय दृष्टि एवं आलोचनात्मक चिंतन का विकास कर सकेंगे।

<u>पाठ्‌यक्रम–विभाजन</u>

इकाई–1. प्रगतिवाद का परिचय, प्रगतिवाद का स्वरूप, हिंदी में प्रगतिवाद की पृष्ठभूमि, हिंदी साहित्य में प्रगतिवादी विचारधारा का प्रारम्भ।

इकाई–2. प्रगतिवादी साहित्य का उदेश्य, प्रगतिवादी काव्य की प्रवृतियाँ, प्रगतिवाद की प्रमुख कवियों–शिवमंगल सिंह 'सुमन', केदारनाथ अग्रवाल, नागार्जुन का साहित्यिक परिचय एवं काव्य सौन्दर्य।

इकाई–3. त्रिलोचन, रांगेयराघव, रामविलास शर्मा का साहित्यिक परिचय एवं काव्य सौन्दर्य।

इकाई–4. सरदार पूर्णसिंह के निबंध– सच्ची वीरता, कन्यादान, पवित्रता, आचरण की सभ्यता, अमरीका का मस्ताना योगी।

आवश्यक निर्देश :– पाठ्‌यक्रम में दिए गए उपर्युक्त बिन्दुओं से बाहर कोई प्रश्न नहीं पूछा जाएगा।

1. **प्रश्न संख्या–1 से 4**– में पाठ्‌यक्रम की चारों इकाइयों से आन्तरिक विकल्प के साथ कुल 8 प्रश्न पूछे जाएंगे जिनमें से विद्यार्थियों को 04 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न के 14+14+14+14 = 56 अंक निर्धारित हैं। (उत्तरों की अधिकतम शब्द सीमा : 500 शब्द)
2. **प्रश्न संख्या–5**– पाठ्‌यक्रम की प्रत्येक इकाई से 2 प्रश्नों का चयन करते हुए सम्पूर्ण पाठ्‌यक्रम से 8 अति लघूत्तरात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से विद्यार्थियों को किन्हीं 7 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न 2 अंक का होगा। कुल मिलाकर यह प्रश्न 2X7 = 14 अंकों का होगा। (उत्तरों की अधिकतम शब्द सीमा : 15–20 शब्द)

संदर्भ सूची–

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास– सम्पादक डॉ. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
2. हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास– डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
3. हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास– बाबू गुलाबराय, साहित्यरत्न भण्डार प्रकाशन, आगरा।
4. हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास– डॉ. रामकुमार वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
5. हिन्दी साहित्य की भूमिका– आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. हिन्दी वाङ्मय का विकास – डॉ. सत्येदव चौधरी, प्रकाशक–मेहरचन्द लक्ष्मणदास, दरियागंज, दिल्ली।

बी.ए. हिन्दी अनिवार्य
(पंचम सेमेस्टर)
हिन्दी साहित्य का इतिहास (प्रयोगवादी युग) (Course Type : DSE-3)

विषय कोड–24UN-HND-505
क्रेडिट : 04

पूर्णांक : 100
लिखित : 70
आन्तरिक मूल्यांकन : 30
समय : 3 घण्टे

शिक्षण–अधिगम के उद्देश्य व अपेक्षित परिणाम

- **उद्देश्य (Objective)**

1. विद्यार्थियों को प्रयोगवादी युग के उद्‌भव, विकास, पृष्ठभूमि तथा हिन्दी साहित्य में उसके महत्व से परिचित कराना।
2. प्रयोगवादी काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों, बिम्ब–योजना, पुराख्यान तत्व एवं नवीन काव्य–दृष्टि की समझ विकसित करना।
3. प्रयोगवादी एवं नई कविता के प्रमुख कवियों के व्यक्तित्व, कृतित्व तथा काव्य–सौन्दर्य का अध्ययन कराना।
4. विद्यार्थियों में आधुनिक हिन्दी काव्य के प्रति आलोचनात्मक, विश्लेषणात्मक एवं तुलनात्मक दृष्टिकोण विकसित करना।

- **अधिगम प्रतिफल (Learning outcome)**

1. विद्यार्थी प्रयोगवाद एवं नई कविता की अवधारणा, स्वरूप तथा साहित्यिक विशेषताओं का विश्लेषण कर सकेंगे।
2. विद्यार्थी प्रयोगवादी काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों तथा उसकी अभिव्यक्ति–शैली की व्याख्या कर सकेंगे।
3. विद्यार्थी प्रमुख कवियों के साहित्यिक योगदान एवं काव्य–सौन्दर्य का सम्यक् मूल्यांकन कर सकेंगे।
4. विद्यार्थी नई कविता, अकविता एवं आधुनिक काव्य–चेतना के अंतर्संबंधों को समझते हुए आलोचनात्मक अध्ययन करने में सक्षम होंगे।

पाठ्‌यक्रम–विभाजन

इकाई–1. प्रयोगवादी युग का परिचय, प्रयोगवादी युग की प्रवृत्तियाँ, प्रयोगवाद की पृष्ठभूमि, तारसप्तक और प्रयोगवाद का प्रारम्भ, बिम्बों की प्रचुर योजना, पुराख्यान तत्व अथवा काव्यरूढ़ि।

इकाई–2. प्रयोगवादी युगके प्रुमख कवियों– अज्ञेय, गिरिजाकुमार माथुर, मुक्तिबोध, भारतभूषण अग्रवाल का साहित्यिक परिचय एवं काव्य सौन्दर्य।

इकाई–3. धर्मवीर भारती, भवानीप्रसाद मिश्र, शमशेरबहादुर सिंह का साहित्यिक परिचय एवं काव्य सौन्दर्य।

इकाई–4. नई कविता का अर्थ एवं स्वरूप, नई कविताकी प्रवृंत्तियाँ, नई कविता की साहित्यिक मूल्य की समस्या; नई कविता और अकविता।

आवश्यक निर्देश :– पाठ्‌यक्रम में दिए गए उपर्युक्त बिन्दुओं से बाहर कोई प्रश्न नहीं पूछा जाएगा।

1. **प्रश्न संख्या–1 से 4**– में पाठ्‌यक्रम की चारों इकाइयों से आन्तरिक विकल्प के साथ कुल 8 प्रश्न पूछे जाएंगे जिनमें से विद्यार्थियों को 04 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न के 14+14+14+14 = 56 अंक निर्धारित हैं। (उत्तरों की अधिकतम शब्द सीमा : 500 शब्द)
2. **प्रश्न संख्या–5**– पाठ्‌यक्रम की प्रत्येक इकाई से 2 प्रश्नों का चयन करते हुए सम्पूर्ण पाठ्‌यक्रम से 8 अति लघूत्तरात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से विद्यार्थियों को किन्हीं 7 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न 2 अंक का होगा। कुल मिलाकर यह प्रश्न 2X7 = 14 अंकों का होगा। (उत्तरों की अधिकतम शब्द सीमा : 15–20 शब्द)

संदर्भ सूची–

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास– सम्पादक डॉ. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
2. हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास– डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
3. हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास– बाबू गुलाबराय, साहित्यरत्न भण्डार प्रकाशन, आगरा।
4. हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास– डॉ. रामकुमार वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
5. हिन्दी साहित्य की भूमिका– आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. हिन्दी वाङ्मय का विकास – डॉ. सत्येदव चौधरी, प्रकाशक–मेहरचन्द लक्ष्मणदास, दरियागंज, दिल्ली।

बी.ए. हिन्दी अनिवार्य
(पंचम सेमेस्टर)
कबीरदास : विशेष अध्ययन (Course Type : DSE-3)

विषय कोड–24UN-HND-506
क्रेडिट : 04

पूर्णांक : 100
लिखित : 70
आन्तरिक मूल्यांकन : 30
समय : 3 घण्टे

शिक्षण–अधिगम के उद्देश्य व अपेक्षित परिणाम

- **उद्देश्य (Objective)**

1. विद्यार्थियों को कबीर के युगीन परिवेश, भक्तिकाल एवं सन्त काव्य की प्रमुख विशेषताओं से परिचित कराना।
2. कबीर के व्यक्तित्व, दर्शन, रहस्य साधना, समन्वयवादी दृष्टि तथा विद्रोही चेतना की समझ विकसित करना।
3. कबीर के काव्य में निहित सामाजिक, आध्यात्मिक एवं मानवीय मूल्यों का अध्ययन कराना।
4. विद्यार्थियों में कबीर की भाषा, शैली, काव्यरूप एवं तुलनात्मक साहित्यिक विश्लेषण की क्षमता विकसित करना।

- **अधिगम प्रतिफल (Learning outcome)**

1. विद्यार्थी कबीर के साहित्य, विचारधारा एवं उनके युगीन महत्व का विश्लेषण कर सकेंगे।
2. विद्यार्थी कबीर के निर्गुण भक्ति, रहस्यवाद, प्रेमाभक्ति तथा सामाजिक चेतना के स्वरूप को स्पष्ट कर सकेंगे।
3. विद्यार्थी कबीर एवं अन्य संत कवियों (विशेषतः जायसी) की काव्य–दृष्टि का तुलनात्मक अध्ययन कर सकेंगे।
4. विद्यार्थी कबीर की भाषा, उलटबासियों, साखियों तथा उनकी दार्शनिक एवं समकालीन प्रासंगिकता का आलोचनात्मक मूल्यांकन करने में सक्षम होंगे।

पाठ्यक्रम–विभाजन

इकाई–1. कबीर की युगीन परिस्थितियाँ, सन्त काव्य का परिचय, भक्तिकाल की विशेषताएँ, कबीर का साहित्यिक परिचय, कबीर का विद्रोही व्यक्तित्व और उनका युग।

इकाई–2. कबीर की शिष्य परमपरा; कबीर के राम का परिचय, कबीर की रहस्य साधना, कबीर का विद्रोही स्वर, कबीर की समन्वयवादी चेतना।

इकाई–3. कबीर की प्रेमाभक्ति, कबीर और जायसी के रहस्यवाद का तुलनात्मक अध्ययन, कबीर की सामाजिक भावना, निर्गुण काव्यधारा में कबीर, कबीर के गुरु का महत्व।

इकाई–4. कबीर की उलटबासियाँ, कबीर का काव्यरूप, कबीर की भाषा और शैली, कबीर काव्य की प्रासंगिगता, कबीर की सखियों का महत्व, कबीर की दार्शनिक चेतना।

आवश्यक निर्देश :– **पाठ्यक्रम में दिए गए उपर्युक्त बिन्दुओं से बाहर कोई प्रश्न नहीं पूछा जाएगा।**

1. **प्रश्न संख्या–1 से 4**– में पाठ्यक्रम की चारों इकाइयों से आन्तरिक विकल्प के साथ कुल 8 प्रश्न पूछे जाएंगे जिनमें से विद्यार्थियों को 04 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न के 14+14+14+14 = 56 अंक निर्धारित हैं। (उत्तरों की अधिकतम शब्द सीमा : 500 शब्द)
2. **प्रश्न संख्या–5**– पाठ्यक्रम की प्रत्येक इकाई से 2 प्रश्नों का चयन करते हुए सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से 8 अति लघूत्तरात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से विद्यार्थियों को किन्हीं 7 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न 2 अंक का होगा। कुल मिलाकर यह प्रश्न 2X7 = 14 अंकों का होगा। (उत्तरों की अधिकतम शब्द सीमा : 15–20 शब्द)

संदर्भ सूची–

1. हिन्दी वाङ्मय का विकास – डॉ. सत्येदव चौधरी, प्रकाशक–मेहरचन्द लक्ष्मणदास, दरियागंज, दिल्ली।
2. कबीर– आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. कबीर : विमर्श के नए सन्दर्भ– डॉ. श्रद्धा सिंह, संजय बुक सेण्टर, वाराणसी।
4. कबीर ग्रंथावली– डॉ. श्यामसुन्दर दास, प्रकाशन केन्द्र, न्यू बिल्डिंग्स, अमीनाबाद, लखनऊ।
5. कबीर मीमांसा– रामचन्द्र तिवारी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. कबीर–कवि, साधक, समाज सुधारक– प्रो. राधेश्याम दुबे, किशोर विद्या निकेतन, नई दिल्ली।

बी.ए. हिन्दी अनिवार्य
(षष्ठ सेमेस्टर)
भारतीय और पाश्चात्य काव्यशास्त्र (Course Type : CC-6, -MCC-11)

विषय कोड–24UN-HND-601
क्रेडिट : 04

पूर्णांक : 100
लिखित : 70
आन्तरिक मूल्यांकन : 30
समय : 3 घण्टे

शिक्षण–अधिगम के उद्देश्य व अपेक्षित परिणाम

- **उद्देश्य (Objective)**

1. विद्यार्थियों को साहित्यशास्त्र की मूल अवधारणाओं से परिचित कराना तथा काव्य के स्वरूप को समझने की क्षमता विकसित करना।
2. भारतीय काव्यशास्त्र के प्रमुख सिद्धान्तों का अध्ययन कर विद्यार्थियों में भारतीय काव्य–परम्परा की सैद्धान्तिक समझ विकसित करना।
3. पाश्चात्य काव्यशास्त्र के प्रमुख विचारकों के काव्य सम्बन्धी सिद्धान्तों का अध्ययन कर तुलनात्मक एवं आलोचनात्मक दृष्टि का विकास करना।
4. काव्यांगों के विवेचन के माध्यम से विद्यार्थियों में काव्य–पाठ, विश्लेषण एवं सौन्दर्यबोध की क्षमता का विकास करना।

- **अधिगम प्रतिफल (Learning Outcome)**

1. विद्यार्थी काव्य की अवधारणा, उसके भेद, प्रयोजन एवं साहित्यशास्त्रीय आधारों को स्पष्ट रूप से समझकर उनका व्यावहारिक प्रयोग कर सकेंगे।
2. विद्यार्थी भारतीय काव्यशास्त्र के रस, रस निष्पत्ति एवं विभिन्न काव्य–सम्प्रदायों के सिद्धान्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या करने में सक्षम होंगे।
3. विद्यार्थी भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र के प्रमुख सिद्धान्तों की तुलना कर उनकी विशेषताओं एवं सीमाओं का आलोचनात्मक मूल्यांकन कर सकेंगे।
4. विद्यार्थी काव्य में प्रयुक्त रस, अलंकार, छन्द, काव्य–गुण एवं दोषों की पहचान कर साहित्यिक रचनाओं का सम्यक् विश्लेषण एवं सौन्दर्यपरक मूल्यांकन कर सकेंगे।

<u>पाठ्यक्रम–विभाजन</u>

1. साहित्यशास्त्र

- काव्य की परिभाषा और लक्षण।
- काव्य के भेद–महाकाव्य, गीतिकाव्य और मुक्तक काव्य।
- काव्य–प्रयोजन।
- काव्य हेतु।

2. भारतीय काव्यशास्त्र

- रस का स्वरूप और रस के अंवयव।
- रस निष्पत्ति के सिद्धान्त।
- काव्य–सम्प्रदाय– अलंकार सम्प्रदाय, रीति सम्प्रदाय और रस सम्प्रदायं।

3. पाश्चात्य काव्यशास्त्र

- प्लेटो के काव्य सम्बन्धी विचार।
- अरस्तू विरेचन सिद्धान्त।
- लोंजाइनस का उदात्त तत्व।
- वर्डस्वर्थ का काव्यभाषा सिद्धान्त।
- कॉलरिज का कल्पना सिद्धान्त।

4. काव्यांग विवेचन

- **रस विवेचन**–प्रमुख रसों के लक्षण और उदाहरण।
- **अलंकार विवेचन**–अनुप्रास, यमक, श्लेष, उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, अतिशयोक्ति, विभावना और मानवीकरण।
- **छन्द विवेचन**– चौपाई, दोहा, सोरठा, रोला, उल्लाला, कुंडलिया और सवैया।
- **काव्य–गुण और काव्य–दोष।**

आवश्यक निर्देश :— पाठ्यक्रम में दिए गए उपर्युक्त बिन्दुओं से बाहर कोई प्रश्न नहीं पूछा जाएगा।

1. **प्रश्न संख्या—1 से 4**— में पाठ्यक्रम की चारों इकाइयों से आन्तरिक विकल्प के साथ कुल 8 प्रश्न पूछे जाएंगे जिनमें से विद्यार्थियों को 04 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न के 14+14+14+14 = 56 अंक निर्धारित हैं। (उत्तरों की अधिकतम शब्द सीमा : 500 शब्द)
2. **प्रश्न संख्या—5**— पाठ्यक्रम की प्रत्येक इकाई से 2 प्रश्नों का चयन करते हुए सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से 8 अति लघूत्तरात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से विद्यार्थियों को किन्हीं 7 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न 2 अंक का होगा। कुल मिलाकर यह प्रश्न 2X7 =14 अंकों का होगा। (उत्तरों की अधिकतम शब्द सीमा : 15—20 शब्द)

सन्दर्भ सूची—

1. काव्यशास्त्र— डॉ. भगीरथ मिश्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
2. भारतीय और पाश्चात्य काव्यशास्त्र की रूपरेखा— डॉ. रामचन्द्र तिवारी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
3. काव्यशास्त्र की भूमिका— डॉ. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
4. पाश्चात्य काव्यशास्त्र की परंपरा— (सं.) डॉ. नगेन्द्र और डॉ. सावित्री सिन्हा, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली।
5. पाश्चात्य काव्यशास्त्र— देवेन्द्रनाथ शर्मा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
6. रस अलंकार छन्द तथा अन्य काव्यांग— डॉ. वेंकटेश शर्मा, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर।

बी.ए. हिन्दी अनिवार्य
(षष्ठ सेमेस्टर)
सूरदास : विशेष अध्ययन (Course Type : MCC-12)

विषय कोड–24UN-HND-602
क्रेडिट : 04

पूर्णांक : 100
लिखित : 70
आन्तरिक मूल्यांकन : 30
समय : 3 घण्टे

शिक्षण–अधिगम के उद्देश्य व अपेक्षित परिणाम

- **उद्देश्य (Objective)**

1. विद्यार्थियों को कृष्णभक्ति काव्य परम्परा, प्रमुख सम्प्रदायों तथा अष्टछाप कवियों के साहित्यिक योगदान से परिचित कराना।
2. सूरदास के व्यक्तित्व, कृतित्व तथा उनके काव्य की प्रमुख विशेषताओं एवं साहित्यिक सौन्दर्य की समझ विकसित करना।
3. सूरदास के काव्य में व्यक्त भक्तिभावना, वात्सल्य, गीतित्व, लोकतत्व एवं प्रकृति–चित्रण का अध्ययन कराना।
4. विद्यार्थियों में भ्रमरगीत परम्परा तथा कृष्णभक्ति काव्य की आलोचनात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन क्षमता विकसित करना।

- **अधिगम प्रतिफल (Learning outcome)**

1. विद्यार्थी कृष्णभक्ति काव्यधारा, उसके प्रमुख कवियों एवं साहित्यिक प्रवृत्तियों का विश्लेषण कर सकेंगे।
2. विद्यार्थी सूरदास के काव्य की विशेषताओं, भक्तिभावना, वात्सल्य एवं काव्य–सौन्दर्य की व्याख्या कर सकेंगे।
3. विद्यार्थी भ्रमरगीत के दार्शनिक आधार, उद्देश्य एवं काव्यगत सौष्ठव का मूल्यांकन कर सकेंगे।
4. विद्यार्थी सूरदास तथा समकालीन कवियों के साहित्यिक योगदान एवं काव्य–दृष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करने में सक्षम होंगे।

पाठ्यक्रम–विभाजन

इकाई–1. कृष्णकाव्य के प्रमुख सम्प्रदाय, कृष्णकाव्य परम्परा, अष्टछाप और उसके कवियों का परिचय, कृष्णभक्ति काव्य की प्रमुख प्रवृतियाँ, कवि सूरदास का सहित्यिक सौन्दर्य।

इकाई–2. कृष्णमार्गी शाखा के प्रतिनिधि कवि, सूरदास के काव्य की विशेषताएँ, सूरदास की भक्तिभावनां, सूरदास का वात्सल्य वर्णन, सूरदास का गीति तत्व, सूरदास का लोकतत्व।

इकाई–3. भ्रमरगीत परम्परा का परिचय, भ्रमरगीत में प्रकृति चित्रण, भ्रमरगीत का दार्शनिक आधार, भ्रमरगीत का उदेश्य, भ्रमरगीत का काव्य–सौष्ठव।

इकाई–4. सूरदास का वाग्वैदग्ध्य, मीरांबाई, नंददास, रसखान और रहीम का साहित्यिक सौन्दर्य।

आवश्यक निर्देश :– **पाठ्यक्रम में दिए गए उपर्युक्त बिन्दुओं से बाहर कोई प्रश्न नहीं पूछा जाएगा।**

1. **प्रश्न संख्या–1 से 4**– में पाठ्यक्रम की चारों इकाइयों से आन्तरिक विकल्प के साथ कुल 8 प्रश्न पूछे जाएंगे जिनमें से विद्यार्थियों को 04 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न के 14+14+14+14 = 56 अंक निर्धारित हैं। (उत्तरों की अधिकतम शब्द सीमा : 500 शब्द)
2. **प्रश्न संख्या–5**– पाठ्यक्रम की प्रत्येक इकाई से 2 प्रश्नों का चयन करते हुए सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से 8 अति लघूत्तरात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से विद्यार्थियों को किन्हीं 7 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न 2 अंक का होगा। कुल मिलाकर यह प्रश्न 2X7 = 14 अंकों का होगा। (उत्तरों की अधिकतम शब्द सीमा : 15–20 शब्द)

संदर्भ सूची–

1. सूरदास – नन्ददुलारे वाजपेयी, प्रकाशक रू आत्मा राम एंड संस, दिल्ली।
2. सूर साहित्य– डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. सूर और उनका साहित्य – डॉ. हरवंशलाल शर्मा, भारत प्रकाशन मंदिर, अलीगढ़।
4. सूर की काव्य कला– डॉ. मनमोहन गौतम, भारतीय साहित्य मंदिर, दिल्ली।
5. सूरदास और वल्लभ सम्प्रदाय– दीनदयाल गुप्त, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।

बी.ए. हिन्दी अनिवार्य
(षष्ठ सेमेस्टर)
जयशंकर प्रसाद : विशेष अध्ययन (Course Type : DSE-4)

विषय कोड–24UN-HND-603
क्रेडिट : 04

पूर्णांक : 100
लिखित : 70
आन्तरिक मूल्यांकन : 30
समय : 3 घण्टे

शिक्षण–अधिगम के उद्देश्य व अपेक्षित परिणाम

- **उद्देश्य (Objective)**

1. विद्यार्थियों को जयशंकर प्रसाद के व्यक्तित्व, कृतित्व तथा छायावादी साहित्य में उनके योगदान से परिचित कराना।
2. प्रसाद की काव्य, नाट्य एवं कहानी कला की प्रमुख विशेषताओं तथा साहित्यिक सौन्दर्य की समझ विकसित करना।
3. 'कामायनी', 'आँसू', 'चन्द्रगुप्त', 'ध्रुवस्वामिनी' तथा चयनित कहानियों के दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक एवं कलात्मक पक्षों का अध्ययन कराना।
4. विद्यार्थियों में साहित्यिक विश्लेषण, तुलनात्मक अध्ययन एवं आलोचनात्मक चिंतन की क्षमता विकसित करना।

- **अधिगम प्रतिफल (Learning outcome)**

1. विद्यार्थी जयशंकर प्रसाद के साहित्यिक योगदान तथा छायावादी युग में उनके महत्व का विश्लेषण कर सकेंगे।
2. विद्यार्थी 'कामायनी', 'आँसू' एवं अन्य कृतियों के दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक एवं साहित्यिक पक्षों की व्याख्या कर सकेंगे।
3. विद्यार्थी प्रसाद के नाटकों एवं कहानियों के प्रतिपाद्य, पात्र–योजना तथा कलात्मक विशेषताओं का मूल्यांकन कर सकेंगे।
4. विद्यार्थी प्रसाद की काव्य, नाट्य एवं कहानी कला का समालोचनात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन करने में सक्षम होंगे।

पाठ्यक्रम–विभाजन

इकाई–1. जयशंकर प्रसाद का साहित्यिक परिचय, छायावाद के प्रमुख कवियों– सुमित्रानन्दन पन्त, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', महादेवी वर्मा और रामकुमार वर्मा का साहित्यिक परिचय, प्रसाद के 'आँसू' काव्य का साहित्यिक सौन्दर्य।

इकाई–2. जयशंकर प्रसाद की 'कामायनी' की ऐतिहासिकता, 'कामायनी' का महाकाव्यत्व, कामायनी का दर्शन, कामायनी में मनोवैज्ञानिकता, कामायनी का उद्देश्य, कामायनी का आनन्दवाद।

इकाई–3. 'चन्द्रगुप्त' नाटक का प्रतिपाद्य, 'चन्द्रगुप्त' नाटक की पात्र योजना, 'चन्द्रगुप्त' नाटक की अभिनेयता, 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक का तात्विक विवेचन, 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक का उद्देश्य, प्रसाद की नाट्यकला।

इकाई–4. जयशंकर प्रसाद की कहानियों– 'ग्राम', 'आँधी', 'मधुआ', 'पुरस्कार', 'इन्द्रजाल', 'शरणागत' और 'आकाशदीप' का तात्विक विवेचन, विवेच्य कहानियों का साहित्यिक सौन्दर्य, विवेच्य कहानियों का प्रतिपाद्य, प्रसाद की कहानी कला।

आवश्यक निर्देश :– पाठ्यक्रम में दिए गए उपर्युक्त बिन्दुओं से बाहर कोई प्रश्न नहीं पूछा जाएगा।

1. **प्रश्न संख्या–1 से 4**– में पाठ्यक्रम की चारों इकाइयों से आन्तरिक विकल्प के साथ कुल 8 प्रश्न पूछे जाएंगे जिनमें से विद्यार्थियों को 04 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न के 14+14+14+14 = 56 अंक निर्धारित हैं। (उत्तरों की अधिकतम शब्द सीमा : 500 शब्द)
2. **प्रश्न संख्या–5**– पाठ्यक्रम की प्रत्येक इकाई से 2 प्रश्नों का चयन करते हुए सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से 8 अति लघूत्तरात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से विद्यार्थियों को किन्हीं 7 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न 2 अंक का होगा। कुल मिलाकर यह प्रश्न 2X7 = 14 अंकों का होगा। (उत्तरों की अधिकतम शब्द सीमा : 15–20 शब्द)

संदर्भ सूची–

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास– सम्पादक डॉ. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
2. हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास– डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
3. हिन्दी साहित्य का अतीत (भाग एक और दो)– विश्वनाथप्रसाद मिश्र वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास– डॉ. रामकुमार वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
5. हिन्दी साहित्य की भूमिका– आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. हिन्दी वाङ्मय का विकारा – डॉ. सत्येदव चौधरी, प्रकाशक–मेहरचन्द लक्ष्मणदास, दरियागंज, दिल्ली।

बी.ए. हिन्दी अनिवार्य
(षष्ठ सेमेस्टर)
प्रेमचन्द : विशेष अध्ययन (Course Type : DSE-4)

विषय कोड–24UN-HND-604
क्रेडिट : 04

पूर्णांक : 100
लिखित : 70
आन्तरिक मूल्यांकन : 30
समय : 3 घण्टे

शिक्षण–अधिगम के उद्देश्य व अपेक्षित परिणाम

- **उद्देश्य (Objective)**

1. विद्यार्थियों को प्रेमचन्द के व्यक्तित्व–कृतित्व, युगीन परिवेश तथा उनके जीवन–दर्शन से परिचित कराना।
2. प्रेमचन्द के उपन्यासों, कहानियों, पत्रकारिता एवं अन्य गद्य–विधाओं की प्रमुख विशेषताओं का अध्ययन कराना।
3. प्रेमचन्द साहित्य में निहित सामाजिक यथार्थ, राष्ट्रीय चेतना, नारी–दृष्टि तथा मानवीय मूल्यों की समझ विकसित करना।
4. विद्यार्थियों में साहित्यिक विश्लेषण, आलोचनात्मक चिंतन एवं समकालीन संदर्भों में साहित्य के मूल्यांकन की क्षमता विकसित करना।

- **अधिगम प्रतिफल (Learning outcome)**

1. विद्यार्थी प्रेमचन्द के साहित्यिक योगदान तथा हिन्दी साहित्य में उनके महत्व का विश्लेषण कर सकेंगे।
2. विद्यार्थी 'गोदान' एवं चयनित कहानियों के कथ्य, पात्र–योजना, सामाजिक यथार्थ एवं साहित्यिक सौन्दर्य की व्याख्या कर सकेंगे।
3. विद्यार्थी प्रेमचन्द की उपन्यास कला, कहानी कला, पत्रकारिता एवं सम्पादन दृष्टि का मूल्यांकन कर सकेंगे।
4. विद्यार्थी वर्तमान सामाजिक संदर्भों में प्रेमचन्द साहित्य की प्रासंगिकता को समझते हुए समालोचनात्मक अध्ययन करने में सक्षम होंगे।

पाठ्यक्रम–विभाजन

इकाई–1. प्रेमचंद का साहित्यिक परिचय, प्रेमचंद युगीन परिवेश, प्रेमचंद का जीवन दर्शन, प्रेमचंद की नारी भावना, प्रेमचंद युग का राष्ट्रीय परिदृश्य।

इकाई–2. प्रेमचंद का उपन्यास 'गोदान', 'गोदान' उपन्यास में कृषक जीवन की त्रासदी का चित्रण, 'गोदान' में आदर्श और यथार्थ, 'गोदान' में गाँव और शहर, 'गोदान' उपन्यास की पात्र योजना, हिंदी उपन्यास के विकास में प्रेमचंद का योगदान।

इकाई–3. प्रेमचंद की कहानियों 'कफ़न', 'जुलूस', 'दो बैलों की कथा', 'नशा', 'सवा सेर गेहूँ, 'रामलीला', 'आत्माराम', 'प्रेरणा', 'मंत्र', 'दूध का दाम', 'ईदगाह' और 'सद्गति' का तात्विक विवेचन, आलोच्य कहानियों का साहित्यिक सौन्दर्य, प्रेमचंद की कहानी कला ।

इकाई–4. प्रेमचंद की उपन्यास कला, प्रेमचंद की पत्रकारिता, प्रेमचंद की सम्पादन कला, प्रेमचंद की नाट्यकला, वर्तमान सन्दर्भों में प्रेमचंद साहित्य की प्रासंगिकता, प्रेमचंद की निबंधकला।

आवश्यक निर्देश :– **पाठ्यक्रम में दिए गए उपर्युक्त बिन्दुओं से बाहर कोई प्रश्न नहीं पूछा जाएगा।**

1. **प्रश्न संख्या–1 से 4**– में पाठ्यक्रम की चारों इकाइयों से आन्तरिक विकल्प के साथ कुल 8 प्रश्न पूछे जाएंगे जिनमें से विद्यार्थियों को 04 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न के 14+14+14+14 = 56 अंक निर्धारित हैं। (उत्तरों की अधिकतम शब्द सीमा : 500 शब्द)
2. **प्रश्न संख्या–5**– पाठ्यक्रम की प्रत्येक इकाई से 2 प्रश्नों का चयन करते हुए सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से 8 अति लघूत्तरात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से विद्यार्थियों को किन्हीं 7 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न 2 अंक का होगा। कुल मिलाकर यह प्रश्न 2X7 = 14 अंकों का होगा। (उत्तरों की अधिकतम शब्द सीमा : 15–20 शब्द)

संदर्भ सूची–

1. प्रेमचन्द– डॉ. रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. प्रेमचन्द कहानी कोश– डॉ. कमलकिशोर गोयनका, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. कलम का सिपाही– अमृतराय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. प्रेमचन्द– (सं.) डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, प्रकाशन संस्थान, दिल्ली।
5. समस्यामूलक उपन्यासकार– डॉ. महेन्द्र भटनागर, मेहरचन्द मुंशीराम, दिल्ली।
6. प्रेमचन्द और उनका युग– डॉ. रामविलास शर्मा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।

बी.ए. हिन्दी अनिवार्य
(षष्ठ सेमेस्टर)
लोक साहित्य (Course Type : DSE-5)

विषय कोड–24UN-HND-605
क्रेडिट : 04

पूर्णांक : 100
लिखित : 70
आन्तरिक मूल्यांकन : 30
समय : 3 घण्टे

शिक्षण–अधिगम के उद्देश्य व अपेक्षित परिणाम

- **उद्देश्य (Objective)**

1. विद्यार्थियों को लोक साहित्य की अवधारणा, स्वरूप, विकास एवं उसके अध्ययन की परम्परा से परिचित कराना।
2. लोक साहित्य, लोक संस्कृति, लोक मानस एवं शिष्ट साहित्य के अन्तर्सम्बन्धों की समझ विकसित करना।
3. लोक साहित्य की प्रमुख विधाओं–लोकगीत, लोककथा, लोकगाथा एवं लोकनाटक का अध्ययन कराना।
4. विद्यार्थियों में भारतीय लोक परम्पराओं, भाषायी विविधता एवं सांस्कृतिक विरासत के प्रति संवेदनशील एवं विश्लेषणात्मक दृष्टि विकसित करना।

- **अधिगम प्रतिफल (Learning outcome)**

1. विद्यार्थी लोक साहित्य की परिभाषा, स्वरूप तथा उसकी प्रमुख विशेषताओं का विश्लेषण कर सकेंगे।
2. विद्यार्थी लोक साहित्य एवं शिष्ट साहित्य के संबंध तथा लोक संस्कृति में उनकी भूमिका को स्पष्ट कर सकेंगे।
3. विद्यार्थी लोकगीत, लोककथा, लोकगाथा एवं लोकनाटक की संरचना एवं विशेषताओं का मूल्यांकन कर सकेंगे।
4. विद्यार्थी हिन्दी की विभिन्न लोक परम्पराओं एवं जनपदीय साहित्य की सांस्कृतिक प्रासंगिकता का आलोचनात्मक अध्ययन करने में सक्षम होंगे।

पाठ्यक्रम–विभाजन

इकाई–1. लोक साहित्य की परिभाषा एवं स्वरूप, लोक साहित्य के अध्ययन का इतिहास, लोक साहित्य के प्रमुख और गौण रूप, लोक की प्राचीन और आधुनिक अवधारणा।

इकाई–2. लोक साहित्य एवं शिष्ट साहित्य में अंतर और अन्तर्सम्बन्ध, लोक साहित्य और लोक मानस, लोक साहित्य और लोक संस्कृति का अन्तर्सम्बन्ध, हिंदी का लोक साहित्य, बुन्देली, मगही, मैथिली के लोक साहित्य का परिचय।

इकाई–3. लोकगीत की परिभाषा और लक्षण, लोकगीतों के विविध रूपों का परिचय, हिंदी का लोक साहित्य (भोजपुरी, अवधी, ब्रज) लोककथा की परिभाषा और लक्षण।

इकाई–4. लोकगाथा की परिभाषा और लक्षण, लोकगाथाओं का परिचय, भारत की प्रमुख लोकगाथाएँ, लोकनाटक की परिभाषा और लक्षण, हिंदी की जनपदीय बोलियों के प्रमुख लोकनाटकों का संक्षिप्त परिचय।

आवश्यक निर्देश :– पाठ्यक्रम में दिए गए उपर्युक्त बिन्दुओं से बाहर कोई प्रश्न नहीं पूछा जाएगा।

1. **प्रश्न संख्या–1 से 4**– में पाठ्यक्रम की चारों इकाइयों से आन्तरिक विकल्प के साथ कुल 8 प्रश्न पूछे जाएंगे जिनमें से विद्यार्थियों को 04 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न के 14+14+14+14 = 56 अंक निर्धारित हैं। (उत्तरों की अधिकतम शब्द सीमा : 500 शब्द)
2. **प्रश्न संख्या–5**– पाठ्यक्रम की प्रत्येक इकाई से 2 प्रश्नों का चयन करते हुए सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से 8 अति लघूत्तरात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से विद्यार्थियों को किन्हीं 7 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न 2 अंक का होगा। कुल मिलाकर यह प्रश्न 2X7 = 14 अंकों का होगा। (उत्तरों की अधिकतम शब्द सीमा : 15–20 शब्द)

संदर्भ सूची–

1. हिंदी लोक साहित्य का इतिहास– डॉ. श्रीकृष्ण अग्रवाल
2. लोक साहित्य : प्रस्तावना– डॉ. सत्येंद्र
3. हिंदी का आंचलिक लोक साहित्यशास्त्र– डॉ. श्याम परमार
4. लोक और लोक का स्वर– आचार्य विद्यानिवास मिश्र
5. लोककला और साहित्य– डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल
6. हिंदी साहित्य में लोकतत्व– डॉ. रवीन्द्र भ्रमर
7. भारतीय लोक साहित्य– डॉ. महेंद्र रघुवंशी
8. लोकगीत और साहित्य– पं. रामनरेश त्रिपाठी
9. राजस्थानी लोक साहित्य– डॉ. नन्दलाल कल्ला
10. हरियाणा का लोक साहित्य– डॉ. श्याम परमार

बी.ए. हिन्दी अनिवार्य
(षष्ठ सेमेस्टर)
हिन्दी कहानी साहित्य (Course Type : DSE-5)

विषय कोड–24UN-HND-606
क्रेडिट : 04

पूर्णांक : 100
लिखित : 70
आन्तरिक मूल्यांकन : 30
समय : 3 घण्टे

शिक्षण–अधिगम के उद्देश्य व अपेक्षित परिणाम

- **उद्देश्य (Objective)**

1. विद्यार्थियों को हिन्दी कहानी साहित्य के उद्भव, विकास तथा विभिन्न कालों की कहानी परम्परा से परिचित कराना।
2. प्रमुख हिन्दी कहानीकारों एवं उनकी प्रतिनिधि कहानियों के साहित्यिक, सामाजिक एवं कलात्मक पक्षों का अध्ययन कराना।
3. विद्यार्थियों में कहानी के कथ्य, शिल्प, चरित्र–चित्रण एवं साहित्यिक सौन्दर्य के विश्लेषण की क्षमता विकसित करना।
4. कहानी साहित्य के माध्यमं से सामाजिक यथार्थ, मानवीय संवेदनाओं एवं आलोचनात्मक दृष्टिकोण का विकास करना।

- **अधिगम प्रतिफल (Learning outcome)**

1. विद्यार्थी हिन्दी कहानी साहित्य के विकासक्रम तथा प्रमुख कहानीकारों के योगदान का विश्लेषण कर सकेंगे।
2. विद्यार्थी चयनित कहानियों के कथानक, पात्र, उद्देश्य एवं साहित्यिक सौन्दर्य की व्याख्या कर सकेंगे।
3. विद्यार्थी कहानी साहित्य में निहित सामाजिक, सांस्कृतिक एवं मानवीय मूल्यों का मूल्यांकन कर सकेंगे।
4. विद्यार्थी विभिन्न कहानीकारों की रचना–दृष्टि एवं कहानी–कला का समालोचनात्मक अध्ययन करने में सक्षम होंगे।

पाठ्यक्रम–विभाजन

इकाई–1. हिंदी कहानी का उद्भव और विकास, राजेन्द्रबाला घोष (बंगमहिला) की 'दुलाईवाली', चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' की कहानी 'सुखमय जीवन' और 'उसने कहा था' कहानियों का साहित्यिक सौंदर्य, पठित कहानियों का तात्विक विवेचन एवं कहानीकार का साहित्यिक परिचय।

इकाई–2. पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' की कहानी 'गंगा का बेटा', 'फागुन के चार दिन' जैनेद्र की कहानी 'वातायन', 'पाजेब', अज्ञेय की कहानी 'जिज्ञासा', 'कलाकार की मुक्ति' का साहित्यिक सौंदर्य, विवेच्य कहानियों का तात्विक विवेचन एवं कहानीकारों का साहित्यिक परिचय।

इकाई–3. फंणीश्वरनाथ 'रेणु' की कहानी 'लालपान की बेगम', 'मारे गए गुलफ़ाम' उर्फ 'तीसरी कसम', अमरकांत की कहानी 'ज़िन्दगी और जोंक', 'दोपहर का भोजन' का साहित्यिक सौंदर्य, पठित कहानियों का तात्विक विवेचन एवं कहानीकारों का साहित्यिक परिचय।

इकाई–4. कमलेश्वर की कहानियों 'सारा आकाश', 'मिस्टर नटवरलाल', 'राजा निरबंसिया' हरिशंकर परसाई की 'सुदामा के चावल', 'भोलाराम का जीव', 'अकाल उत्सव' का साहित्यिक सौंदर्य, आलोच्य कहानियों का तात्विक विवेचन एवं कहानीकारों का साहित्यिक परिचय।

आवश्यक निर्देश :– पाठ्यक्रम में दिए गए उपर्युक्त बिन्दुओं से बाहर कोई प्रश्न नहीं पूछा जाएगा।

1. **प्रश्न संख्या–1 से 4**– में पाठ्यक्रम की चारों इकाइयों से आन्तरिक विकल्प के साथ कुल 8 प्रश्न पूछे जाएंगे जिनमें से विद्यार्थियों को 04 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न के 14+14+14+14 = 56 अंक निर्धारित हैं। (उत्तरों की अधिकतम शब्द सीमा : 500 शब्द)
2. **प्रश्न संख्या–5**– पाठ्यक्रम की प्रत्येक इकाई से 2 प्रश्नों का चयन करते हुए सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से 8 अति लघूत्तरात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से विद्यार्थियों को किन्हीं 7 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न 2 अंक का होगा। कुल मिलाकर यह प्रश्न 2X7 = 14 अंकों का होगा। (उत्तरों की अधिकतम शब्द सीमा : 15–20 शब्द)

संदर्भ सूची–

1. प्रेमचंद रचनावली (खंड 1 से 4)– मुंशी प्रेमचंद (मानसरोवर के सभी भाग), राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली।
2. प्रतिनिधि कहानियाँ– अज्ञेय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. नई कहानी के संदर्भ और प्रवृत्तियाँ– देवीशंकर अवस्थी, मैकमिलन कंपनी, दिल्ली।
4. परिंदे–निर्मल वर्मा – राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. उसने कहा था और अन्य कहानियाँ– चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी', साहित्य भंडार, नई दिल्ली।
6. लाल पान की बेगम और अन्य कहानियाँ– फणीश्वरनाथ 'रेणु', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. हिंदी कहानी का इतिहास– डॉ. गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
8. हिंदी कहानी : अंतरंग पहचान– डॉ. रामदरश मिश्र, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
9. नई कहानी : परिवेश और परंपरा– डॉ. बच्चन सिंह – राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
10. आधुनिक हिंदी कहानी– डॉ. नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
11. हिंदी कहानी : रचना और सरोकार– डॉ. विश्वनाथप्रसाद तिवारी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
12. समकालीन हिंदी कहानी– डॉ. पुरुषोत्तम अग्रवाल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
13. कथाकार निर्मल वर्मा– डॉ. मैनेजर पाण्डेय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

बी.ए. हिन्दी अनिवार्य
(षष्ठ सेमेस्टर)
हिन्दी भाषा और साहित्य (Course Type : CC-M-6)

विषय कोड–24UN-HND-607N
क्रेडिट : 04

पूर्णांक : 100
लिखित : 70
आन्तरिक मूल्यांकन : 30
समय : 3 घण्टे

शिक्षण–अधिगम के उद्देश्य व अपेक्षित परिणाम

शिक्षण–अधिगम के उद्देश्य–

1. विद्यार्थियों को हिन्दी भाषा, उसकी उत्पत्ति, विकास, देवनागरी लिपि तथा व्याकरण की मूलभूत अवधारणाओं का ज्ञान प्रदान करना।
2. विद्यार्थियों में हिन्दी भाषा के शुद्ध, प्रभावी एवं व्यावहारिक प्रयोग की क्षमता विकसित करना।
3. हिन्दी की काव्य एवं गद्य विधाओं के अध्ययन द्वारा साहित्यिक संवेदनशीलता, आलोचनात्मक दृष्टि एवं अभिव्यक्ति कौशल का विकास करना।
4. साहित्य के माध्यम से सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक एवं राष्ट्रीय मूल्यों के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना।

अपेक्षित परिणाम–

1. विद्यार्थी हिन्दी भाषा, लिपि एवं व्याकरण के मूल तत्वों को समझकर उनका सही प्रयोग कर सकेंगे।
2. विद्यार्थी हिन्दी की विभिन्न साहित्यिक विधाओं एवं रचनाओं का विश्लेषण और व्याख्या करने में सक्षम होंगे।
3. विद्यार्थी भाषा एवं साहित्य के माध्यम से विचारों को प्रभावी रूप से व्यक्त कर सकेंगे।
4. विद्यार्थी साहित्य में निहित मानवीय, सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों को अपने व्यवहार एवं चिंतन में अपनाने में सक्षम होंगे।

पाठ्यक्रम–विभाजन

इकाई–1. हिन्दी भाषा और लिपि

- हिन्दी भाषा का उद्‌भव व विकास
- हिन्दी की उपभाषाएँ और बोलियाँ
- देवनागरी लिपि का विकास
- देवनागरी लिपि की विशेषताएँ

इकाई–2. हिन्दी भाषा का व्याकरण

- व्याकरण की परिभाषा व उसका महत्व
- वर्ण विचार– वर्ण की परिभाषा और वर्ण के भेद (स्वर और व्यंजन)
- शब्द विचार– स्रोत के आधार पर शब्द–भेद (तत्सम, तद्‌भव, देशज, विदेशी और संकर)
- पद विचार– संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रिया–विशेषण, अव्यय और उनके भेद
- वाक्य विचार– अर्थ व रचना के आधार पर वाक्य–भेद

इकाई–3. हिन्दी की विविध कविताएँ

- जो बीत गई सो बात गई : हरिवंशराय बच्चन
- हम पंछी उन्मुक्त गगन के : शिवमंगल सिंह 'सुमन'
- सच है महज संघर्ष ही : जगदीश गुप्त
- मृत्तिका : नरेश मेहता
- उतनी दूर मत ब्याहना बाबा : निर्मला पुतुल

इकाई–4. हिन्दी का गद्य साहित्य

- विश्व मन्दिर (भावात्मक निबन्ध) : वियोगी हरि
- मैं और मेरा देश (विचारात्मक निबन्ध) : कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'
- गौरा (संस्मरण) : महादेवी वर्मा
- प्रायश्चित (कहानी) : भगवतीचरण वर्मा

आवश्यक निर्देश :– पाठ्यक्रम में दिए गए उपर्युक्त बिन्दुओं से बाहर कोई प्रश्न नहीं पूछा जाएगा। पाठ्यक्रम की इकाई 3 और 4 में से निबन्धात्मक प्रश्नों में केवल काव्य–सौन्दर्य और उद्देश्य या सन्देश–आधारित प्रश्न पूछे जाएंगे।

1. **प्रश्न संख्या–1**– पाठ्यक्रम की प्रत्येक इकाई से 2 प्रश्नों का चयन करते हुए सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से 8 अति लघूत्तरात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से विद्यार्थियों को किन्हीं 7 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न 2 अंक का होगा। कुल मिलाकर यह प्रश्न 2X7 = 14 अंकों का होगा। (उत्तरों की अधिकतम शब्द सीमा : 15–20 शब्द)
2. **प्रश्न संख्या–2 से 5**– में पाठ्यक्रम की चारों इकाइयों से आन्तरिक विकल्प के साथ कुल 8 प्रश्न पूछे जाएंगे जिनमें से विद्यार्थियों को 04 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न के 10+10+10+10 = 40 अंक निर्धारित हैं। (उत्तरों की अधिकतम शब्द सीमा : 300 शब्द)
3. **प्रश्न संख्या–6**– में पाठ्यक्रम की इकाई–3 (गद्य) और 4 (पद्य) से आन्तरिक विकल्प के साथ 2–2 व्याख्याएँ पूछी जाएंगी जिनमें से विद्यार्थियों को 1–1 व्याख्या करनी होगी। प्रत्येक व्याख्या के 8+8 = 16 अंक निर्धारित हैं। (उत्तरों की अधिकतम शब्द सीमा : 250 शब्द)